क्षेत्रीय आर्थिक विकास एवं नियोजन

खण्ड – 1 स्थानिक सिद्धान्त

अंचल क्षेत्रीय अर्थशास्त्र : महत्व तथा आर्थिक विश्लेषण में स्थान क्षेत्रीय महत्व
एकाधिकृत बाजार एवं मूल्य निर्धारण
स्थानीयकरण के सिद्धान्त
बाजार के आकार एवं स्वरूप के सिद्धान्त
साम्यावस्था और असाम्यावस्था सिद्धान्त :
लौश मॉडल व उसकी आलोचना
केन्द्रीयकरण की मितव्यवताएं व अमितव्यवताएं :
विकास ध्रुव का विचार

खण्ड 2 अंतराल का समष्टि अर्थशास्त्र

क्षेत्र : अवधारणा प्रकार व पहचान
प्रदेशिक आय लेखा : प्रदेशिक आदा- प्रदा विश्लेषण
वस्तुएं एवं पूंजी का अन्तर्प्रादेशिक प्रवाह/ चालू एवं पूंजी खातोंका संतुलन
प्रादेशिक विकास का सिद्धान्त
क्षेत्रीय संवृद्धि के सिद्धान्त-मिर्डल और हर्ष मैन के सिद्धान्तों का समीक्षात्मक मूल्यांकन
केन्द्रीय स्थल सिद्धान्त

खण्ड 3 क्षेत्रीय नियोजन मॉडल एवं अनुप्रयोग

प्रादेशिक आगत-निर्गत विश्लेषण
अन्तर अंचल क्षेत्रीय व्यापार एवं अंचल क्षेत्रीय गुणक
औद्योगिक काम्प्लेक्स विश्लेषण
बहु स्तरीय नियोजन : इंटरेटिव प्रक्रम का उपयोग
लांगे के मॉडल का परिचय
गुरुत्वाकर्षण मॉडल तथा अन्तर अंचल क्षेत्रीय प्रवाह का निर्धारण

खण्ड – 4 भारतीय अर्थव्यवस्था की संरचना

क्षेत्रीय विकास के सूचक : आंकड़ों के स्त्रोत एवं बाधाएं
भारत के प्रमुख प्राकृतिक संसाधन एवं उनका प्रादेशिक वितरण
औपनिवेशिक काल में भारतीय प्रादेशिक संरचना का उद्भव
कृषि विकास : परिवर्तनशील क्षेत्रीय संरचना
औद्योगिक विकास : परिवर्तनशील क्षेत्रीय संरचना
सामाजिक आर्थिक आधारभूत ढ़ाँचे के विकास में क्षेत्रीय असंतुलन
राज्यों के अन्तर्गत अंत: क्षेत्रीय विषमताएं (राजस्थान के विशेष संदर्भ में)

खण्ड – 5 भारत में क्षेत्रीय नियोजन

भारत में नियोजन प्रक्रिया के क्षेत्रीय आयाम
भारत में बहुस्तरीय नियोजन (राज्य स्तर तथा जिला स्तर नियोजन के विशेष संदर्भ में)
नगर एवं महानगर नियोजन
ग्रामीण शहरी समन्वय के लिए नियोजन
अंचल क्षेत्रीय साधन विकास की योजनाएं
जिला एवं नीचे के स्तर पर विकेन्द्रित नियोजन
भारत में क्षेत्रीय विकास योजनाएं